nus and rightful share in the profits of these undertakings.

(iv) ACUTE SHORTAGE OF EDIBLE OILS LIKE MUSTARD AND RAPE-SEED OILS RISE IN KEROSENE OIL PRICE AND NON-AVAILABILITY OF CONTROLLED CLOTH IN FAIR PRICE SHOPS IN RURAL AREAS.

श्री युवराज (कटिहार) : मान्यवर, इस देश की सब स पिछड़ी जनता गांवों में बसती है ? उस पिछड़ी जनता की आबादी इस देश में 82 फीसदी है। जिन उपभोक्ता वस्तुओं का वितरण आजकल सरकार कर रही है, उनका वितरण देश को सब से पिछड़ी जनता तक ठीक से नहीं हो पाता । जो सरसों का तेल या रेपसीड आयल और सस्ता कपड़ा कंट्रोल की दुकानों द्वारा मुहैया किया जाता है उसका प्रबंध इन गरीब लोगों के लिए अच्छी प्रकार से नहीं हो पा रहा है । इन चीजों का थोड़ा बहुत प्रबंध शहरी क्षेत्रों में तो पाया जाता है लेकिन देश के साढ़े पांच लाख देहातों में जो देश की 82 प्रतिशत जनता बसती है उसके लिए इसकी व्यवस्था का नितान्त अभाव है । देहातों में सरसों के तेल की नितान्त कमी है, रेपसीड आयल की नितान्त कमी है । देहातियों को पांच रुपये तक अधिक मूल्य देना पड़ता है । जो लोग एक-दो रुपये रोज की मजदूरी करते हैं वे कैसे इन चीजों को खरीद सकते हैं?

सरकार ने कपड़े सस्ती दर पर आपूर्ति के लिए दुकानें खोली हैं। वह कपड़ा भी उनको नहीं मिल पाता है । जो यह सस्ती दर का कपड़ा उपलब्ध है वह ऐसी क्वालीटी का है कि जो कपड़ा पहले 6 महीने चल जाता था, यह कपड़ा तीन–चार महीने में ही फट जाता है।

राशन की दुकानों में तेल नहीं मिलता, रेपसीड तेल नहीं मिलता है । सस्ते कपड़े की दुकानों में सस्ती दर के कपड़े की कमी है। इन चीजों का संबंध इस देश की गरीब जनता से इस देश की ये खेतिहार जनता से है । जिन जीवनोपयोगी चीजों का इस देश की ग्रामीण जनता से संबंध है वे आज उपलब्ध नहीं हैं। कहीं भी देहात में आज कड़वा तेल नहीं मिलता है । अगर आप इसको अधिक मूल्य दे कर खरीदना चाह तो आपको मिल जाएगा। जिस किसी सामान का आप अधिक दाम देना चाहे वह सामान आपको मिल जाएगा। देहातों में जो गरीब लोग हैं, खेतीहर मजदूर हैं उनकी क्रय शक्ति नष्ट हो गई है और वे अधिक मूल्य पर इन जीवन नोपयोगी वस्तुओं को खरीद नहीं सकते हैं । तेल तो गायब हो ही गया है कैरोसीन तेल भी देहात में रहने वाले लोगों को, खेतीहर मजदूरों को नहीं मिलता है। अगर यों कहा जाए कि वे अंधेरे में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

आज भ्रष्टाचार भी बहुत बढ़ गया है । सप्लाई विभाग के लोग इसमें लिप्त हैं । सप्लाई इंस्पैक्टर, प्रत्येक प्रखंड के बी० डी० ओ० और प्रत्येक जिले में जो सप्लाई अफसर हैं भ्रष्टाचार में लिप्त हैं । इसलिए देश में आज असन्तोष फैलता जा रहा है । वितरण की जो प्रणाली है वह अत्यन्त ही असन्तोषप्रद है, अपर्याप्त है । सबसे पिछड़ा हुआ राज्य बिहार है । आप देखें कि भारत सरकार के आपूर्ति मंत्री ने तेल का आवंटन किया, तेल का एलाटमेंट किया तो अभी कुछ दिन पहले हमारे मंत्री जी श्री मोहन धारिया ने कहा था कि अगर किसी राज्य में किसी क्षेत्र में तेल की कमी हो, रेपसीड आयल की कमी हो तो उन्हें पत्र लिखा जाये और वह चार दिनों के अन्दर-अन्दर वहां तेल की आपूर्ति कर देंगे। अध्यक्ष महोदय, मैंने उसी दिन एक पत्र उनको लिखा लेकिन चार दिन के बजाय आज एक सप्ताह बीत गया, इसकी आपूर्ति की दिशा में कोई कदम नहीं उठाया गया है । स्थिति दिन प्रति दिन बद से बदतर होती जा रही है। देहातों की

[श्री युवराज]

मूक जनता कुछ बोल नहीं पाती है, खेतीहर मजदूर असंगठित हैं, वे जोरदार प्रतिकार नहीं कर पाते। इस वास्ते उसकी ओर सरकार का विशेष ध्यान जाना चाहिये। देहातों में कड़वा तेल नहीं मिलता है, कैरोसीन आयल की कमी है, मोटा कपड़ा जो देहातों की ग्रामीण जनता पहनती है, मजदूर पहनते हैं, वह भी उनको नहीं मिल पाता है। यह जो असन्तोषजनक परिस्थिति पैदा हो गई है इसकी ओर मैं आपूर्ति विभाग का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं और मैं आशा करता हूं कि इस दिशा में आवश्यक पग उठाए जाएंगे।

12.58 hrs.

MOTION *RE.* STATEMENT ON 'SAMACHAR' BY THE MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING

MR. SPEAKER: The House will now take up the motion of Shri Samar Guha.

SHRI SAMAR GUHA (Contai): I beg to move:

> "That this House do consider the statement made by the Minister of Information and Broadcasting in the House on the 14th November, 1977 regarding 'Samachar'."

I have moved the motion but at the same time I want to make a suggestion that in music, if there is break in music, the music is lost; so also in a serious speech if there is break, the speech is lost.

MR. SPEAKER: Not with all musicians. Then, we shall start at 2 p.m.

13 hrs.

The Lok Sabha adjourned for lunch till Fourteen of the Clock.

The Lok Sabha re-assembled, after lunch at nine minutes past Fourteen of the Clock.

[Mr. Deputy Speaker *in the Chair*]

MOTION *RE.* STATEMENT ON 'SAMACHAR' BY THE MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING—*Contd.*

MR. DEPUTY SPEAKER: Shri Samar Guha:

SHRI SAMAR GUHA: Mr. Deputy Speaker, Sir; during the days of the Emergency, innumerable savage crimes were committed by the Government—killing, shooting and incancerating thousands of innocent people. It appears to me that the worst crime was committed by the Government in trying to kill the spirit or the soul of Indian democracy. I mean the freedom of the news agency. Democracy can function properly and in a right spirit through the mass media, particularly the news agencies and the newspapers, if they have their complete freedom, freedom from any kind of coercion, any kind of compulsion, any kind of terror from the Government.

As it happened, and it happens also, in the case of all autocratic, dictatorial or totalitarian rule or regime, wherever you find, the first target is the mass media. If they want to control the people in an autocratic way, the first aim is to catch or get hold of the mass media as an octopus or in a Gobbelsian way. During the emergency the same attempt was made when the four news agencies were forcibly brought under one umbrella, the monopoly umbrella of one news agency, which was called *Samachar*.

Actually, *Samachar* was born out of *papachar*, to spread *brashtachar* and to perpetuate *swechachar* of the Empress of Emergency. *Samachar* is an immoral product, an illegitimate product, undemocratic product and also, what I would call, a sinful product. It is the duty of the Janata Government to wipe out this first sin, as I would